केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन

[1]शक्तिवान सिंह
[2]डॉ0 पवन कुमार पचौरी
[1]शोध छात्र सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेरीबरी झुनझुनू राजस्थान।
[2]विभागाध्यक्ष शारीरिक शिक्षा विभाग कुलभास्कर आश्रम पी0जी0कालेज इलाहाबाद, (उ0प्र0)

प्रस्तावना– भारत के स्वतंत्र होने के पश्चात केन्द्रीय सरकार द्वारा डॉ0 तारा चन्द्र समिति का गठन किया गया जिसके परिपेक्ष में समिति द्वारा शारीरिक शिक्षा के सन्दर्भ में कई सूझाव दिये गये उन सुझाव के आधार पर केन्द्रीय सरकार ने शारीरिक शिक्षा तथा मनोरंजन का केन्द्रीय परामर्श बोर्ड बनाया और 10 सदस्यों वाली इस समिति की 19 मार्च 1950 को डॉ0 तारा चन्द्र की अध्यक्षता में बैठक कि गई इस बोर्ड के द्वारा कि गई संस्तुतियों के आधार पर भारत में खेलों और शारीरिक शिक्षा के विकास हेतु कई प्रस्ताव स्वीकार किये उसमें एक प्रस्ताव में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों द्वारा अध्यपनरत छात्र–छात्राओं को अनुशासन और अच्छे स्वास्थ के लिए क्रीड़ी की सुविधाओं का विकास करना भी आवश्यक माना गया। 1986 शिक्षा नीति और राष्ट्रीय खेल नीति में भी इस ओर ध्यान दिया गया। शोधार्थी ने इस समितियों और समय–समय पर बनी राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा एवं खेल नीतियों पर ध्यान आकर्षित करते हुए यह महसूस किया की केन्द्रीय सरकार की शिक्षण नीतियों में एक महाविद्यालय में सुविधाओं की आवश्यकता होती है और खेल गतिविधियों को संचालित करने के लिए जिन अपेक्षित तत्वों की आवश्यकता होती है वे है कि नहीं। 2005 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त हो गया है और इस विश्वविद्यायल में कुल 12 महाविद्यायल संघटक के रूप में है जो कि इलाहाबाद महानगर के निगम पालिका परिक्षेत्र के अर्न्तगत आते हैं।''***केन्द्रीयविश्वविद्यायल इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालय* में क्रीड़ी गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन।''**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी और कुछ सीखने की योग्यता उसे अन्य प्राणियों से उच्च स्थान दिलाती है। वह बुद्धि सम्पन्न है जिससे वह अपनी पुश प्रवृत्ति को वातावरण और समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल ढ़ाल लेता है। शिक्षा उसकी आवश्यकता में और श्रीवृद्धि करती है और उसे जीवन में तरक्की करने के लिये और अधिक सक्षम बनाती है। शिक्षा वह प्रक्रिया है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मानव को ज्ञानार्जन करने में प्रेरक दृष्टिकोण प्रदान करती है। प्रोफेसर ड्रेवर के अनुसार ''शिक्षा वह प्रक्रिया है जिससे और जिसके द्वारा युवाओं का ज्ञान, चरित्र और व्यवहार एक सांचे और आकार में ढलता है।'' यह एक रचनात्मक प्रक्रिया है जो हमें ज्ञान–सम्पन्न बनाती है। और निजी व्यक्तित्व के सभी पहलुओं से अवगत कराती हैं। जैसे– शारीरिक,मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक। संक्षेप में, शिक्षा मानव को सम्पूर्णता, संतुलितता और सर्वोत्मुखी विकास कर उसे सभ्य, परिपक्व और जिम्मेदार सामाजिक सदस्य बनाकर एक गत्यात्मक व्यक्तित्व प्रदान करती है।

1. मेरिकन एसोसिएशन फार हेल्थ फिजिकल एजुकेशन एण्ड रिक्रियेशनः ''शारीरिक शिक्षा शारीरिक क्रियाकलापों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का एक तरीका है जो मानव बुद्धि विकास और व्यवहार के मूल्यों के लिये होती है।''

2. **जे0बी0 नैश के अनुसार :** ''शारीरिक शिक्षा समूची शिक्षा का एक भाग है जिसका सम्बन्ध मांसपेशियों की क्रियाओं तथा उनसे सम्बन्धित अनुक्रियाओं से है।''

3. **जे0पी0 थामस के अनुसार :** शारीरिक शिक्षा वह शिक्षा है जो शरीर द्वारा शरीर के लिये होती है।

समस्या कथन :–

व्यक्ति का स्वास्थ्य जीवन रूपी पुष्प फूल में शहद के समान है। स्वास्थ्य मनुष्य का आधार स्तम्भ है। स्वास्थ्य बैंक की पूंजी के समान है। हमारा स्वास्थ्य ठीक न होने तो पुस्तकों द्वारा प्राप्त ज्ञान कोई उपकार नहीं कर सकता। अतः हमारा समस्त ज्ञान विज्ञान निष्फल हो जाता है। इसलिए स्वास्थ्य को बनाये रखने की आवश्यकता होती है। शारीरिक शिक्षा भी जीवन के लिए उसी प्रकार आवश्यक है। जिस प्रकार एक हरे वृक्ष में पत्तियाँ सूर्य की रोशनी के द्वारा क्लोरोकफिल का निमार्ण करती है। जिससे वृक्ष को आवश्यक पोषक पदार्थ प्राप्त होता है ठीक उसी प्रकार मनुष्य एक हरा वृक्ष है। लेकिन उसमें सहनशीलता, स्फूर्ति, शारीरिक तथा मानसिक स्थिति का विकास शारीरिक शिक्षा के द्वारा होता है।

तन्दुरूस्ती हजार नियामत है। मनुष्य का कार्यक्षेत्र कोई भी हो, विचार कुछ भी हो, जीवनचर्या कैसी हो, अस्वस्थ्य शरीर सदा ही उसकी विकास की राह का रोड़ा बनेगी। उसके विपरीत यदिस्वास्थ्य ठीक है तो मनुष्य का जीवन पग–पग पर उत्साह पूर्वक आगे बढ़ता है। यदि मनुष्य का शरीर रोगग्रत हो, बीमारियों से पीड़ित हो, तो मनुष्य न ही स्वच्छन्दता पूर्वक कोई कार्य कर सकता है और न ही जीवन का सुन्दर उपभोग ही कर सकता है। उसके सारे अरमान धरे के धरे रह जाते और तड़पते रहते है। इचछाओं को दबाने से मनुष्य चिड़चिड़ा हो जाता है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए ''केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ी गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' आंकलन का निर्णय लिया गया है क्योंकि वर्तमान स्थिति की आधारशिला पर ही आगामी नियोजन का भवन निर्मित होता है। यह आशा की उपलब्ध हो सकेगी जिससें कि भविष्य में महाविद्यालय स्तरीय क्रीड़ी गतिविधियों के प्रभाव उभर कर सामने आये और उसका प्रयोग आगामी नियोजन के लिए किया जा सके। वर्तमान क्रीड़ी गतिविधियों के आंकलन के लिये ही शोधकर्ता द्वारा विषय के विद्वानों व अपने शिक्षाकों के परामर्श एवं मार्गदर्शन में ''केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' को अपने का विषय चुना है।

समस्या का महत्व

1.प्रथम महत्व यह होगा कि इसके द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के अधिनस्थ के महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा से सर्वोक्षण क्रीड़ा परम्परा स्थापित हो और देश में स्थित अन्य केन्द्रीय महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा विभाग के स्नपातकोत्तर विद्यार्थी प्रस्तुत शोध का नमूने के रूप में अपने–अपने क्षेत्र के महाविद्यालयों में समान्तर कार्य करें।

2.दूसरा केन्द्रीय महाविद्यालयों में संख्या के अनुपात में शारीरिक शिक्षा व अन्य सहायक कर्मी न हो और मैदान भी उपलब्ध न हो तो प्रतिभाओं का विकास कैसे होगा। प्रस्तुत अनुसंधान, अनुसंधानकर्ता शिक्षा के अधिकारियों को महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों की सूचना देकर इसके जवाब की पूर्ति के लिए आवश्यक कदम उठाने का अवसर देगा।

3.हमारे संविधान के अन्तर्गत लोकतंत्र के चार बुनियादी सिद्धांत है जिसमें समानता का मूल अधिकार का सिद्धांत भी है इसमें महाविद्यालयों में पढ़ रही लड़कियों का शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम एवं खेलकूद गतिविधियों में समुचित प्रावधान नहीं होता । तो यह नारी समाज के लिये घोर अन्याय है। आज तक देखा गया है कि खेलकूद गतिविधियों में लड़कियों की भीगीदारी बहुत कम है। लड़कियों को खेलकूद में भाग लेना उतना ही आवश्यक है जितना कि लड़को का खेलों में भाग लेना। अतः इस लघु शोध का एक महत्व यह भी है की महाविद्यालयों में महिला खेल की कितनी व्यवस्था है इसका आंकलन करना।

कठिनाइयां एवं सीमांकन

कठिनाइयां :–

1. अनुसंधानकर्ता को एक–एक महाविद्यालयों में कई बार जाना पड़ा क्योंकि अनुसंधानकर्ता ने अनुसूची के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर साक्षात्कार के माध्यम से लिखे हैं।
2. दूसरा कारण अनुसंधानकर्ता को अनेको बार महाविद्यलयों में जाना पड़ा क्योंकि वहॉ के कर्मचारी कार्य की व्यस्तता के वजह से समय नहीं दे पा रहे थें।
3. तीसरा कारण संस्था के प्रमुखों से मुलाकात न हो पाना।

4. महाविद्यलयों में मूल्यांकन का कार्य चलता रहता है। इसलिए अनुसंधानकर्ता को कई बार महाविद्यालयों के चक्कर लगाने पड़े।

सीमांकन :–

1. समय सीमा को देखते हुए केवल '' केन्द्रीय विश्वविद्यालयों इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' अनुसंधान कार्य को सीमित रखा गया।
2. इससे पूर्व महाविद्यालयों का और जिले के महाविद्यालयों में शारीरिक शिक्षा गतिविधियों की योजना की आशा की जाती है कि आगे बढ़ाकर इलाहाबाद जनपद के समस्त महाविद्यालयों का अध्ययन करके आंकड़ें करेगा।
3. इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि केन्द्रिय विश्वविद्यालयों के संघटक इलाहाबाद महाविद्यालयों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिनका अध्ययन इसी आधार पर किया जा सकेगा।
4. प्रस्तुत अनुसूची की एक प्रति लघुशोध प्रबंध के परिशिष्ट भाग में परिवेक्षकों के अवलोकन हेतु सम्मिलित की जा ही है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत शोध विषय से पहले भी इस विषय से सम्बधिंत मिलते–जुलते विषय के लघु शोधों एवं शांधों का अध्ययन अन्य शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय में व विश्वविद्यालयों में किया जा चुका है। अतः सम्बधिंत शोध प्रबन्धों का सूक्ष्म अध्ययन आर्ववर्ती शोधों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया है जिससे एक आधार मिला है।

पारसनाथ राय– अनुसंधान परिचय 7th बी. डी. आगरा 1997–98 पारसनाथ राय की पुस्तक अनुसंधान परिचय से सहायता मिला। सम्बंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित सभी जानकारी पुस्तकें, ज्ञानकोषों पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ताओं को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, प्रश्नावली तैयार साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधे के तीर के समान होगा इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पल भी आगे नहीं बढ़ सकता। जब तक कि उसे ज्ञात न हो कि किस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है तथा किस विधि से किया गया है तथा निष्कर्ष क्या आयेगा। तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर सकता है।

बी0 एस0 कालिका – लघुशोध प्रबंध डिग्री कालेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन (एल.एन.आई.पी.) इनका विचार है कि शारीरिक शिक्षा का उपयुक्त कार्यक्रम निम्नलिखित बातो को ध्यान में रखकर अपनाया जाये।

शरीरिक शिक्षा का कार्यक्रम छात्रों की रूचि एवं क्षमताओं को ध्यान में रखकर बनाया जाय जिसमें वांछित परिणाम प्राप्त उन खेलों एवं शारीरिक क्रियाओं कों कार्यक्रम में स्थान दिया जाय जिनके द्वारा छात्रों में उत्तरदायित्व ग्रहण करने की भावना तथा सहयोग आदि गुणों का विकास हो सकें। परम्परागत ढंग खेलों तथा शारीकि क्रियाओं को कार्यक्रय में स्थान दिया जाय।

डिसूजा – ए सर्वे ऑफ फिजिकल एजुकेशन प्रोग्राम ऑफ गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल के शारीरिक शिक्षा के तत्वों का अध्ययन किया इस अध्ययन से अपना लघुशोध फिजिकल कालेज (एल.एन.आई.पी.) में जमा किया।

शोध पद्धाति का विवरण :–

प्रस्तुत शोध ''केन्द्रिय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीडी गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' है। महाविद्यालयो को शारीरिक शिक्षा गतिविधियों में कौन–कौन से उपकरण सुविधारिक शारीरिक शिक्षा गतिविधियां में कौन–कौन से उपकरण सुविधाएं होनी चाहिए आदि के संदर्भ में शोधार्थी के शोध निर्देशक डॉ0 पवन पचौरी के मार्गदर्शन में प्रश्नवाली तैयार की गई है। इसमें मुख्य छः भाग हैं। जिसके अन्तर्गत लगभग समस्त महाविद्यालयों की समस्त जानकारियां उपलब्ध है।

अनुसंधानकर्ता ने स्वयं आंकड़ो की जानकारी के लिये प्रश्नावाली लेकर सभी महाविद्यालयों में जाकर शारीरिक शिक्षक एवं प्राचार्य से विद्यालय एवं शारीरिक शिक्षा प्रक्रिया एवं खेलकूद गतिविधियों के बारे जानकारी ली व उसका अवलोकन किया।

प्रस्तुत शोधपत्र विषय '' विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतिविधियों के लिए अपेक्षित तत्वों सारणीय किया गया है। इस अध्याय में प्राप्त जानकारियो को सारणी एवं ग्राफ के आधार पर वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद में वैसे तो 11 महाविद्यालय संघटक के रूप मे कार्य कर रहे हैं। परन्तु शोधार्थी को उनमें से 01 महाविद्यालय क्रमशः आर्य कन्या डिग्री कालेज ने कोई भी जानकारी नहीं दी है व मोती लाल नेहरू मेडिकल कालेज में बारम्बार प्रयास के उपरान्त क्रीड़ा अधिकारी से सम्पर्क के अभाव में जानकारी नहीं सकी। अतः शोधार्थी द्वारा अन्य 10 सभी महाविद्यालयों से समकों को संग्रहण किया। उन्ही का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारणी क्र0 01 : आवासीय / गैर आवासीय

क्र0सं0	**प्रकार**	**संख्या**	**प्रतिशत**
01.	आवासीय	0	0
02.	गैर आवासीय	10	100
योग		**10**	**100**

सारणी क्र0 02 : उपलब्ध खेल मैदान

क्र0सं0	**खेल मैदान**	**संख्या**	**प्रतिशत**
01.	हाँ	8	80
02.	नहीं	2	20
योग		**10**	**100**

सारणी क्र0 03 : विभिन्न खेल सुविधाओं की उपलब्धता

क्र0सं0	**सुविधायें**	**संख्या**	**प्रतिशत**
01.	400 / 200 मी0 ट्रैक	4	40
02.	फुटबाल मैदान	7	70
03.	हॉकी मैदान	4	40
04.	बलीबाल मैदान	8	82
05.	बास्केट बाल	8	80
06	जम्पिंग पिट	5	50
07	बैडमिण्टन कोर्ट	6	60
08.	कबड्डी मैदान	5	50
09.	जिम्नेजियम	4	40
10.	खो–खो मैदान	7	70
11.	थ्रोइवेन्ट का मैदान	7	70
12.	खेल शिविर	7	70
13.	जिमनास्टिक हाल	0	0
14.	खेल प्रशिक्षक	7	70
15.	क्रिकेट मैदान	6	60
16.	स्टाप रजिस्टर	10	100
17.	इश्यू रजिस्टर	10	100
18.	प्रथम चिकित्सा	9	90

सारणी क्र0 4: खेल नियमावली एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी

क्र0सं0		संख्या	प्रतिशत
01.	नई खेल नियमावली	0	0
02.	पुस्तक	8	80
03.	पत्रिकाएं	5	50
04.	स्टाप रजिस्टर	10	100
05.	टेस्ट उपकरण	7	70

आंकडो का विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोध का विषय ''केन्द्रिय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीड़ा गतितिधियों के लिये अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' का वर्गीकरण एवं सारणीयन अध्याय तीन के अन्तर्गत किया गया है। तथा उसके अन्दर क्रीड़ा गतिविधियों से सम्बन्धियां जो कि क्रीड़ा को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। प्रश्नावली में जिस प्रकार से अलग–अलग जानकारियों के लिए अलग–अलग शीर्षकों व उपशीर्षकों का उपयोग किया गया है उसी के आधार पर वर्गीकरण व सारणीयन के आधार पर आंकड़ों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया जा सकता है।

आवासीय एवं गैर आवासीय व संख्या :–

सारणी के अध्ययन के उपरान्त यह भी ज्ञात होता है कि सभी 10 महाविद्यायल गैर–आवासीय है तथा छात्रों की संख्या 1 महाविद्यालय के पास 1000 से कम तथा 9 महाविद्यालयों में 1000 से अधिक छात्र/छात्रा हैं।

उपलब्ध खेल मैदान :–

सारणी के अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि 10 महाविद्यालय में से 8 महाद्यिालय ऐसे है जिनके पास खेलकूद मैदान उपलब्ध है जबकि 2 ऐसे महाविद्यालय है जिनके पास मैदान की सुविधा नहीं है।

विभिन्न खेल सुविधाओं की उपलब्धता :

अध्ययन से पता चलता है कि 4 महाविद्यायल में 400 मी0की ट्रैक तथा 200 मी0 का ट्रैक, 4 महाविद्यालय में हॉकी मैदान, 7 महाविद्यालय में फुटबाल मैदान, 8 महाविद्यालय में बालीबाल मैदान, 8 महाविद्यालय में बास्केटबाल कोर्ट , 6 महाद्यिालय में बैडमिण्टन कोर्ट, 5 महाविद्यालय में कबड्डी मैदान, 7 हाल 5 महाद्यिालयों में खेल शिविर, जिमनास्टिक हाला किसी भी महाविद्यालय में नहीं है, 7 महाद्यिालय में खेल प्रशिक्षक है, 6 10 महाविद्यालयों में क्रिकेट मैदान, 10 महाद्यिालयों मे स्टाप रजिस्टर, 10 महाद्यिालयों में इश्यू रजिस्टर तथा 9 महाविद्यालय में प्रथम चिकित्सा उपलब्ध है।

खेल नियमावली एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी :–

सारणी के अध्ययन से यह नहीं पता चला है कि किसी भी महाविद्यालय में नयी नियमावली नहीं है, 8 ऐसे महाविद्यालय है जिनके पास पुस्तके है तथा 5 ऐसे महाविद्यालय है जिनमें पत्र पत्रिकाएं मंगवाई जाती है तथा 10 महाविद्यालय ऐसे है जिनमें स्टाप रजिस्टर है तथा 7 महाविद्यालय ऐसे है जिनके पास टेस्ट उपकरण उपलब्ध है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष :

शोध विषय ''केन्द्रिय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यलयों में क्रीड़ा गतिविधियों के लिये अपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' से प्राप्त आंकड़ों से निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आये हैं जिसके शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से उद्धत किया है–

महाविद्यालयों में क्रीड़ा सम्बन्धी अध्ययन से ज्ञात हुआ कि महाविद्यालयों में न तो मानक के अनुरूप शारीरिक शिक्षक की नियुक्त है और न ही सुविधाएं उपलब्ध है।शोधपत्र विषयः–'' केन्द्रीय विश्वविद्यालय इलाहाबाद उ0प्र0 के संघटक महाविद्यालयों में क्रीडा गतिविधियों के लिए अपेक्षित तथ्यों का अध्ययन सारणी एवं विश्लेषण से यह निष्कर्ष

निकलता है कि अधिकतर महाविद्यलयों में खेल कूद गतिविधियों का संचालन किया जाता है एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा अन्तर महाविद्यालयी प्रतियोगिता कराये जाने से खिलाड़ियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के अवसर कम मिलते हैं। अतः अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय होने के बावजूद भी उच्च स्तर की सुविधाओं शिक्षकों एवं सहकर्मी समूह का नितान्त अभाव है।

सुझावः–

1. यह शोध पत्र एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले महाविद्यालयों पर आधारित है। शोद्यार्थी दूसरे विश्वविद्यालय को तुलनाकर अध्ययन को विस्तृत कर सकते हैं।

2. शोध पत्र में जिन पहलुओं को नहीं सम्मिलित किया गया है उन्हें शोध पत्र के आधार पर आगे बढ़ाकर लघु शोध या पी0एच0डी0 के हेतु शोध विषय के रूप में अपनाया जा सकता है।

3. महाविद्यालय में विश्वविद्यालय को अनुदान देकर केन्द्र सुविधाओं का विस्तार किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. राय, पारसनाथ '' अनुसंधान परिचय'' आगरा, चावला एण्ड संस, 1997–98
2. ढुल, देवेन्द्र सिंह ''शारीरिक शिक्षा तत्व एवं इतिहास व समस्त खेल मैदान नियम'' दिल्ली, फ्रेन्डस पब्लिकेशन इण्डिया, 1997
3. कपिल, एच.के. ''अनुसंधान विधिया'' आगरा हर प्रसाद भार्गव प्रकाशन, 1996–97
4. पचौरी डॉ0 पवन कुमार ''रीवा के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों का आलोचनात्मक अध्ययन'' शोध प्रबन्ध 2001 महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, बनारस, उ0प्र0
5. सूर्यवंशी अनिल कुमार ''लघु शोध प्रबन्धन–मध्यप्रदेश के रीवा जनपद के अन्तर्गत स्थित शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की शारीरिक शिक्षा प्रक्रिया के लिये आपेक्षित तत्वों का अध्ययन'' अ0प्र0सिं0वि0वि0, रीवा – 1998–99
6. सिंह अरूण कुमार लघु शोध प्रबन्ध ''कुसीनगर जिले के तहसील कसया के अन्तर्गत आने वाले इण्टर कालेजो की खेलकूद गतिविधियों का सूक्ष्म अवलोकन'' उ0प्र0सिं0वि0वि0 रीवा – 2003–04
7. सिंह सुष्मिता ''म0प्र0 के सतना शहर के अन्तर्गत स्थित महाविद्यलयों कें खेलकूद समस्याओं का अध्ययन'' (लघुशोध प्रबन्ध) अ0प्र0सिं0वि0वि0, रीवा – 1998–99

पाण्डेय प्रतीक कुमार ''म0प्र0 के अवधेश प्रताप सिह वि0वि0 एवं बरकतउल्ला वि0वि0 के महाविद्यालयों में खेलकूद गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन'' अ0प्र0सिं0वि0वि0, रीवा – 2005

8. सिंह रणविजय ''उ0प्र0 के गाजीपुंर जिले के सैदपुर तहसील के अन्तर्गत आने वाले उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की खेल–कूद गतिविधियो का आलोचनात्मक अध्ययन''।
9. जान फिलिप ''ए सर्वे ऑफ फिजिकल एजुकेशन इन हायर सेकेण्डरी इन ग्रेटर ग्वालियर'' 1965